मुद्रा के कार्य
(Functions of Money)

मुद्रा की विभिन्न परिभाषाओं में मुद्रा के कार्यों का वर्णन भी मिलता है। आज मुद्रा हमारे जीवन का अत्यंत महत्त्वपूर्ण अंग बन गई है। सामाजिक-आर्थिक क्रियाओं का संपादन मुद्रा के बिना संभव नहीं है। अर्थव्यवस्था के प्रत्येक क्षेत्र में मुद्रा अहम भूमिका अदा करती है। इस संदर्भ में प्रोफेसर मार्शल ने ठीक ही लिखा है, "मुद्रा वह धुरी है जिसके चारों ओर अर्थशास्त्र चक्कर काटता है।" ("Money is a pivot around which economic science clusters.") मुद्रा के बिना आर्थिक क्रियाओं की बात सोची ही नहीं जा सकती। पीगू ने भी मुद्रा को वैसा तेल (lubricating oil) माना है जो आर्थिक मशीन को आसानी से संचालित करता है। आधुनिक जीवन में मुद्रा का अत्यधिक महत्त्व है।

प्रोफेसर किनले (Kinley) ने मुद्रा के कार्यों को तीन भागों में विभाजित किया है—

1. मुख्य कार्य (Primary functions)
2. द्वितीयक कार्य (Secondary functions)
3. आकस्मिक कार्य (Contingent functions)

इनका अध्ययन हम अलग-अलग एवं विस्तार से करेंगे। इन कार्यों के अलावा कई अन्य कार्य (other functions) भी हैं, जिन्हें मुद्रा संपादित करती है।

Scanned with CamScanner

मुद्रा के कार्य

1. मुख्य कार्य—(i) विनिमय का माध्यम, (ii) मूल्य का मापक
2. द्वितीयक कार्य—(i) मूल्य का संचय, (ii) विलंबित भुगतान का मानदंड, (iii) मूल्य का हस्तांतरण
3. आकस्मिक कार्य—(i) राष्ट्रीय आय का वितरण, (ii) सीमांत उपयोगिता तथा सीमांत उत्पादकता में समानता लाना, (iii) साख का आधार, (iv) पूँजी या धन को सामान्य रूप प्रदान करना
4. अन्य कार्य—(i) शोधन-क्षमता की गारंटी, (ii) मुद्रा तरल संपत्ति के रूप में, (iii) निर्णय का वाहक

1. मुख्य कार्य (Primary functions)—ये कार्य ऐसे हैं जिनका संपादन मुद्रा हरेक देश एवं काल में करती रही है। इसलिए, इन कार्यों को मौलिक (original) या आधारभूत (fundamental) की संज्ञा दी जाती है। मुद्रा के दो कार्यों को इस श्रेणी में रखा जाता है।

(i) विनिमय का माध्यम (Medium of exchange)—मुद्रा विनिमय के माध्यम का कार्य करती है। यह मुद्रा का केंद्रीय कार्य (central function) है। इस कार्य के संपादन में मुद्रा की सामान्य स्वीकृति की धारणा स्पष्ट रूप से सामने आती है। मुद्रा वस्तुओं के लेन-देन तथा विनिमय में हमारी सहायता करती है। मुद्रा के माध्यम से ही विनिमय का कार्य संपन्न होता है। जब वस्तु-विनिमय प्रणाली थी तब आवश्यकता के दोहरे संयोग की तलाश में कई दिनों का समय लग जाता था। आवश्यकताओं के दोहरे संयोग के अभाव (lack of double coincidence of wants) में विनिमय का कार्य कठिन हो जाता था। मुद्रा ने इस कठिनाई तथा असुविधा को समाप्त कर दिया है। आज मुद्रा के माध्यम से किसी भी वस्तु को बेचा तथा खरीदा जा सकता है। मुद्रा को लोग बेझिझक स्वीकार करते हैं तथा विनिमय का कार्य सुगमतापूर्वक संपन्न होता है।

(ii) मूल्य का मापक (Measure of value)—आज मुद्रा सभी वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्य का सामान्य मापक (common denominator) का कार्य करती है। मुद्रा का यह दूसरा महत्त्वपूर्ण कार्य है। मुद्रा के द्वारा भिन्न-भिन्न वस्तुओं के सापेक्षिक मूल्य की माप की जा सकती है। यह एक सामान्य मापदंड है, जिसके द्वारा मूल्य को आँका जाता है। मुद्रा के आविष्कार से विभिन्न वस्तुओं के मूल्य के मापन या अनुपात के निर्धारण का कार्य आसान बन गया है। जिस प्रकार वजन के लिए किलोग्राम, कपड़ा की लंबाई के लिए मीटर या बुखार मापने के लिए थर्मामीटर का प्रयोग होता है उसी प्रकार वस्तुओं के मूल्य को मापने की इकाई (unit of account) के रूप में मुद्रा का प्रयोग होता है। मुद्रा प्रामाणिक मूल्य-मापक का कार्य करती है।

2. द्वितीयक (सहायक) कार्य (Secondary functions)—मुद्रा के तीन गौण या सहायक कार्य माने गए हैं।

(i) मूल्य का संचय (Store of value)—मुद्रा मूल्य-संचय का कार्य करती है। मुद्रा के रूप में बड़ी मात्रा में धन-संपत्ति का संग्रह किया जा सकता है। वस्तुओं के रूप में यह कार्य अत्यंत कठिन था। मुद्रा के रूप में आसानी से तथा सुरक्षापूर्वक मूल्य या धन का संचय किया जा सकता है। मुद्रा के रूप में धन एक वर्ष से दूसरे वर्ष में आसानी से संचित किया जा सकता है। इस प्रकार, मुद्रा वर्तमान से भविष्य के बीच पुल का कार्य करती है। (Money is a bridge connecting the present to the future.) मुद्रा के रूप में मूल्य या धन का स्थायित्व के साथ संचय संभव है। मुद्रा एक ऐसी युक्ति है जो वर्तमान को भविष्य से जोड़ती है।

(ii) विलंबित भुगतान का मानदंड या मानक (Standard of deferred payments)—आज मुद्रा लिए गए ऋण या उधार के भुगतान के मानदंड का कार्य करती है। आज विलंबित भुगतान मुद्रा के माध्यम से आसान हो गया है। वस्तु-विनिमय प्रणाली में यह कार्य कठिन था। ऋण की राशि का भविष्य में कैसे तथा कितना भुगतान किया जाए, इसका निर्धारण कठिन था। लेकिन, आज मुद्रा के माध्यम से बड़े पैमाने पर ऋण के भुगतान एवं उधार का कार्य संपन्न किया जाता है। मुद्रा के आविष्कार ने व्यवसाय एवं व्यापार कार्यों को प्रोत्साहित किया है। आज मुद्रा विलंबित भुगतान के मानक के रूप में सफलतापूर्वक कार्य करती है, क्योंकि इसका मूल्य अपेक्षाकृत स्थिर (stable) होता है तथा इसमें सर्वग्राह्यता के गुण भी विद्यमान हैं।

(iii) मूल्य का हस्तांतरण (Transfer of value)—आज मुद्रा के द्वारा मूल्य का हस्तांतरण सुगम हो गया है। एक स्थान से दूसरे स्थान या एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति के बीच मूल्य या धन का हस्तांतरण आसानी से किया जा सकता है। किसी वस्तु, सामान, चल या अचल संपत्ति को बेचकर उसके द्वारा कहीं दूसरे स्थान पर उस तरह की वस्तु या संपत्ति आसानी से खरीदी जा सकती है। आज मूल्य या संपत्ति का हस्तांतरण काफी सरल तथा आसान हो गया है। मुद्रा के प्रयोग से इसमें गतिशीलता आई है।

वैसे तो मुद्रा के अनेक कार्य हैं, लेकिन इसके चार कार्यों (विनिमय का माध्यम, मूल्य का मापक, मूल्य का संचय तथा विलंबित भुगतान का मानदंड) को अधिक महत्त्वपूर्ण माना गया है। इसीलिए यह कहा जाता है—Money is a matter of functions four: a medium, a measure, a standard, a store.

3. आकस्मिक कार्य (Contingent functions)—प्रोफेसर किनले (Professor Kinley) ने मुद्रा के चार आकस्मिक कार्यों की चर्चा की है।

(i) राष्ट्रीय आय का वितरण (Distribution of national income)—उत्पादन की क्रिया विभिन्न साधनों के सम्मिलित प्रयास एवं सहयोग द्वारा संपन्न होती है। इनके सहयोग से राष्ट्रीय आय का उत्पादन होता है। पुनः भूमि, श्रम, पूँजी एवं साहसी के बीच राष्ट्रीय आय का वितरण उनके पारितोषिक के रूप में मुद्रा के सहारे किया जाता है। मुद्रा के रूप में ही विभिन्न उत्पादन साधनों का पारिश्रमिक निर्धारित होता है। इस प्रकार, मुद्रा सामाजिक आय या राष्ट्रीय आय के वितरण में सहायक होती है।

Scanned with CamScanner

(ii) सीमांत उपयोगिता तथा सीमांत उत्पादकता में समानता लाना (To bring about equality in marginal utility and marginal productivity)—उपभोक्ता का उद्देश्य अपनी सीमित आय द्वारा अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करना होता है। वह अपनी आय को विभिन्न वस्तुओं पर इस प्रकार खर्च करता है कि उसे विभिन्न वस्तुओं पर किए गए अंतिम इकाई के व्यय से समान संतुष्टि प्राप्त हो सके। विभिन्न वस्तुओं से समान संतुष्टि प्राप्त करने का कार्य उपभोक्ता मुद्रा के माध्यम से करता है।

उत्पादक का उद्देश्य अपने लाभ को अधिकतम बनाना होता है। उत्पादक उत्पादन के लिए साधनों को उसी सीमा तक उत्पादन में लगाता है जहाँ साधन की सीमांत उत्पादकता तथा उनका पारिश्रमिक समान होता है। मुद्रा के माध्यम से ही यह कार्य भी संपन्न होता है।

(iii) साख का आधार (Basis of credit)—आज उधार पर आधारित कार्यों में वृद्धि हुई है। व्यावसायिक बैंक जो उधार या साख का निर्माण करते हैं वह प्राथमिक जमा (primary deposits) पर आधारित होता है। बैंक एक निश्चित अनुपात में नकद कोष (cash reserve) अपने पास रखकर शेष राशि को अग्रिम या ऋण के रूप में ग्राहकों को देते हैं। इस प्रकार, नकद मुद्रा कोष ही साख का आधार होती है। इसमें कमी-बेशी होने पर साख की मात्रा में भी वृद्धि या कमी होती है।

(iv) पूँजी या धन को सामान्य रूप प्रदान करना (Providing general form to capital)—मुद्रा ने धन एवं पूँजी को सामान्य रूप प्रदान किया है। मुद्रा सबसे तरल (liquid) साधन मानी जाती है। इसे, जिस रूप में चाहें, बदला जा सकता है—वस्तु खरीदने के लिए इसका प्रयोग होता है, बचत करने के लिए एवं पूँजी के विनियोग के लिए। इस प्रकार, मुद्रा के कारण पूँजी में तरलता एवं गतिशीलता आई है। मुद्रा ने पूँजी को सामान्य रूप प्रदान कर बचत एवं विनियोग के कार्य को सुगम बनाया है।

4. अन्य कार्य (Other functions)—इनके अलावा भी मुद्रा कुछ अन्य कार्यों (other functions) का संपादन करती है।

(i) शोधन-क्षमता की गारंटी (Guarantee of solvency)—मुद्रा द्वारा ही कोई व्यक्ति या फर्म ऋण-भुगतान की स्थिति में होता है या शोधन-क्षमता प्राप्त करता है। शोधन-क्षमता बनाए रखने के लिए फर्म को अपने पास पर्याप्त मात्रा में मुद्रा रखना आवश्यक है। अतः, मुद्रा शोधन-क्षमता की गारंटी का काम करती है।

(ii) मुद्रा तरल संपत्ति के रूप में (Money as liquid asset)—मुद्रा सबसे तरल साधन (most liquid asset) है। इसे जिस रूप में चाहें, प्रयोग में लाया जा सकता है। संपत्ति के दूसरे रूपों या साधनों में यह तरलता नहीं होती। मुद्रा में तरलता का गुण विद्यमान है, जिसके कारण उसकी उपयोगिता बहुत बढ़ गई है।

(iii) निर्णय को लागू करने का साधन (Means of implementing decision)—मुद्रा के रूप में संपत्ति का संचय किया जाता है। इस संचित मुद्रा का प्रयोग हम भविष्य में अपनी इच्छा एवं निर्णय के अनुसार कर सकते हैं। इस तरह, मुद्रा व्यक्ति के निर्णय के वाहक का कार्य करती है। प्रोफेसर ग्राहम (Professor Graham) ने इस कार्य पर काफी बल दिया है।

इस तरह, हम पाते हैं कि मुद्रा अनेक महत्त्वपूर्ण कार्यों का संपादन करती है। कुछ कार्य मुद्रा प्रारंभ से ही करती आ रही है जबकि कुछ कार्यों का संपादन आर्थिक विकास की प्रक्रिया के तेज होने के बाद मुद्रा द्वारा किया जा रहा है। इस प्रकार, मुद्रा के कार्यों में प्रावैगिकता या गतिशीलता (dynamism) रही है।

Scanned with CamScanner